समयदीपिका

जिसमें

पञ्चाङ्गविचार, स्थूलविचार, संवत्सरविचार, आर्द्रकविचार, शनिराशि व नक्षत्रविचार, सुभिक्ष, दुर्भिक्ष विचारादि वर्णित हैं.

जिसको

पण्डित रघुनाथराव मौज़ा पट्टीपुरह पोस्ट इंटर ज़िला भिंड रियासत गवालियार ने सर्वसाधारणजनों के उपकारार्थ दोहा आदि छन्दों में निर्माण किया.

प्रथम बार

लखनऊ

सुपरिंटेंडेंट बाबू मनोहरलाल भार्गव बी. ए., के प्रबन्ध से

मुंशी नवलकिशोर सी. आई. ई., के छापेख़ाने में छपी

सन् १९१४ ई० ॥

हक़ तसनीफ़ महफ़ूज़ है बहक़ इस छापेख़ाने के।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

भूमिका.

हे महाशय! यद्यपि लोकोपकार के निमित्त बराहादि ऋषियों ने संवत्सरविषयक अनेक ग्रन्थों की रचना कीहै परन्तु उनको अच्छे ही ज्योतिषी समझ सकते हैं अब इस कलिकाल में बारम्बार दुर्भिक्ष पड़नेसे सबको सुभिक्षादि जानने की उत्कण्ठा अहर्निश रहती है इससे मैंने संवत्सरविषयक रचना को भाषा होने में लोकोपकारक समझकर प्राचीन ग्रन्थानुसार और उनके फलों को अनुभव सिद्ध करके समयदीपिका नामक छोटा सा ग्रन्थ भाषा दोहामें बनाया है इसके देखने से प्रतिवर्ष के सुभिक्ष दुर्भिक्ष समर्घ महर्घादि अनेक फल यथार्थ विदित होंगे आशाहै कि जो महाशय इसको देखेंगे वे मुझपर अनुग्रह कर मेरे श्रमको कृतार्थ करेंगे अग्रे किमधिकं बहुज्ञेष्विति शम् ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ समयदीपिकाप्रारम्भः ॥

दोहा ।

श्रीनरहरिपद वन्दि पुनि, सूर्यादिक दिकपाल ।
कालचक्र को जोड़कर, कहौं सुकाल दुकाल ॥ १ ॥
भगणरूप निज अङ्ग पै, ग्रह स्वरूप करि चार ।
कालरूप क्रम सों हरी, जन सुखादि करतार ॥ २ ॥
भगवतमाया प्रबल सों, एक चक्र शिशुमार ।
तामें सत्ताइस नखत, तिन पै खग संचार ॥ ३ ॥
भ्रमत निरन्तर चक्र सों, कालचक्र है सोइ ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

उदय अस्त गति तासु सो, ब्रह्मादिक को होइ॥ ४॥
देवबर्ष बारह सहस, एक चतुर्युग होय।
सहस चतुर्युग को सदा, ब्रह्मा को दिन सोय॥ ५॥
जा क्रम सों शत बर्ष की, परमायुष पहिंचान।
प्रतिदिन प्रलय सुअन्त में, महाप्रलय को जान॥ ६॥
कृत त्रेता द्वापर विषे, रहो धर्म अधिकाय।
स्वाश्रम प्रीति किसान के, मांगे घन बरसाय॥ ७॥
साम दान लखिये जगत, भेद नायिका चीन।
दण्डिन के कर दण्ड सब, रोग शोग भय हीन॥ ८॥
कलि में बिस्वा पांच है, धर्म अपर दश पांच।
लखियत चैन तहां जहां, दान भजन अरु सांच॥ ९॥
पांच पांच बर्षें सहस, बीतें बढ़त अधर्म।
राजा परजा वर्ण सब, छोड़त कछु निज कर्म॥ १०॥
बिनु कुमार्ग लखिये नहीं, द्विज क्षत्री मद छांड़।
द्रोह पिशुनता बिनु मनुज, संन्यासी बिनु रांड़॥ ११॥
तजत सुहृदता सहज जन, कौड़ीहू के काज।
कर दुरभिछ पीड़ित प्रजा, लखियत निर्दय राज॥ १२॥
जा कलिकाल भवाब्धि में, हरि नामहि इक नाव।
विषय पवनलगि तजत नहिं, मनुज पारते पाव॥ १३॥

अथ पञ्चाङ्गविचार॥

तिथि बारभघन पवन के, स्थूल विचार अनेक।
मध्यम बर्ष तदीश के, ग्रह को सूक्षम एक॥ १॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

संवत आदि अधार सौं, करि चहुँ दिशा विचार।
कातिक चैत्र समेत कहु, खग अधेय सौं सार॥ २॥
संवत्सर राजा सचिव, अरु मेघेश रसेश।
ये सातहु आधार हैं, सस्याधिप धान्येश॥ ३॥
राश्यादिक को जीव अरु, नखतन को शनिलेय।
खेट कुयोग सुयोग सब, ये चारहु आधेय॥ ४॥
रवितैं मङ्गल क्रूर हैं, तातैंहूं शनि जान।
बुध गुरु खग ये सौम्य हैं, तातैं बिधु भृगु मान॥ ५॥
पूरब राजा देत फल, पश्चिम देत रसेश।
संवत उत्तर मध्य मैं, दक्षिण मन्त्रि घनेश॥ ६॥
कातिक फल सस्येश को, धान्येशहि को चैत।
पाप सौम्य ग्रह ईश जस, हानि वृद्धि तस दैत॥ ७॥
संवतादि आधार अरु, जीवादिक आधेय।
मिश्रित फल कर दुहुँन को, सार बस्तु कहि देय॥ ८॥
नेष्ट नेष्ट दुर्भिक्ष है, मध्यम नेष्ट किरौल।
उत्तम नेष्टरु मध्यमहि, उत्तम दोउ अतौल॥ ९॥

अथ स्थूलविचार॥

चार मास चैत्रादि की, शुक्ला पड़वा देख।
रेवति भरणी रोहिणी, आर्द्रा मिलैं तु लेख॥ १॥
जल तृण धान्य तिल्हान के, क्रम सौं खम्भ बखान।
ये आवैं जा साल मैं, तिनको बाढ़ा मान॥ २॥
कर्क धनुष संक्रान्ति अरु, दीपमालिका जान।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कुहू अमावस बार शुभ, समय खम्भ जे मान ॥ ३ ॥
प्रथम मुहर्रम दिवस कौं, जो बुध भृगु शनि बार।
कैरोरौ दुरभिछ कुजै, सुरभिछ बाकी बार ॥ ४ ॥
श्रावण बदि एकादशी, जो रोहिणि सुरभिक्ष।
परैं कृत्तिका किरविरौ, मृगशिर तौ दुरभिक्ष ॥ ५ ॥
माघ शीत फागुन पवन, चैत्र बदरई जोय।
माधव ओरै जेठ में, तपै तु समयो होय ॥ ६ ॥
धनके रवि में मूल तें, नवऋष लौं घन पेख।
आर्द्रादिक नवऋक्ष को, गर्भ रह्यो तौ लेख ॥ ७ ॥
हास्तादिक रवि केतु में, रह्यो जु गर्भ नशात।
बर्षै आर्द्रा तरणि में, गर्भ पोष होजात ॥ ८ ॥
चैत्रमास अरु जेठ में, आर्द्रादिक नव ऋक्ष।
नहिं बर्षै तिनको रह्यो, गर्भ जान परतिक्ष ॥ ९ ॥
बर्षै रेवति तरणि जल, विनशै अश्विनि धान।
तृण विनशै भरणी तुवै, कृतिका समयो जान ॥ १० ॥
जेठ रोहिणी मूल पुनि, आर्द्रा के परवेश।
तुवै चार दो तीन पख, नहिं बर्षा लवलेश ॥ ११ ॥
अश्विनि भरणी जो तुवै, रोहिणि तपै न मूल।
बूंदन आर्द्रा कृत्तिका, तौ न होइ कछु तूल ॥ १२ ॥
आषाढ़ी पून्यो दिवस, बर्षै बीजै गाज।
तो डर होइन काल को, आनँद घर घर साज ॥ १३ ॥
दक्षिण नैऋति अगिन अरु, वायब सस्य नशाय।
सुरभिछ शेष दिशान की, करै असाढ़ी बाय ॥ १४ ॥
रवि मङ्गल शनिबार जो, जा महिना में पांच।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बिग्रह पीड़ा हानि लखि, शुभ सों आनँद जांच ॥ १५ ॥
कृष्णपक्ष में तिथि बढ़ै, घटै शुक्ल में जोइ।
तेरा दिन को पाख कै, तेज़ी पीड़ा होइ ॥ १६ ॥
जुड़री आक करील बन, टेसू फूलैं धान।
गांडर गेहूं नीम जौ, वेर चना बहु जान ॥ १७ ॥
जो बादर तीतुर बरन, रहै निशा कै छाय।
तर ऊपर कै जो चलैं, तुरतहि बरषत आय ॥ १८ ॥
पवन थकै चहुँ ओर तें, रवि अति तपै कराल।
नीर सनीरजु कुम्भ को, तो बर्षा ततकाल ॥ १९ ॥
बइये बीज स्वदेश को, मिलै जु काहू भाव।
फरै न मालव जौंडरी, चना न अरु पंजाव ॥ २० ॥
आर्द्रा में बन काकुनी, पुष्य पुनर्वसु ज्वार।
आश्लेषा नों बाजरा, बीज सवेगर डार ॥ २१ ॥
कर अरसी चित्रा चना, गेहूं अरु जौ स्वाति।
खतभर निखर सुखेत में, अति निपजै इहिभांति ॥ २२ ॥
बइये धान्य पिछावतौ, निपजै सूखाऽकाल।
बर्षाऽकाल अगावतौ, नखत न होत सुकाल ॥ २३ ॥

अथ संवत्सरविचार ॥

साठ बर्ष प्रभवादि में, ब्रह्मा बीस बिहार।
बिष्णु बीस पालन करैं, रुद्र बीस संहार ॥ १ ॥
रेवा उत्तर भाग में, संवत है गुरुमान।
चान्द्रमान यम भाग में, प्रविशत हीं फल जान ॥ २ ॥
प्रभवादिक संवत करैं, दुगुनैं तीन घटाय।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सात भाग दे शेष को, फल लखिये चितलाय ॥ ३ ॥
एक चारको नेष्ट फल, उत्तम हैं दो पांच।
मध्यम छै अरु तीन हैं, संवत इहिबिधि जांच ॥ ४ ॥
कातिक संवत नाम तें, चैत्र गणित तें जान।
उत्तम मध्यम नेष्ट जस, तैसोही फल मान ॥ ५ ॥
उत्तम नाम तु रौद्र तें, बर्षा होइ जहान।
मध्यम आर्द्रा मध्य तें, नेष्ट पुनर्वसु जान ॥ ६ ॥
नेष्ट होइ जो गणित फल, तौ बर्षा पूर्बांत।
मध्यम आधे उत्तरा, उत्तम में उतरांत ॥ ७ ॥
शून्य गणित फल में जगत, हस्तन लों जल पेख।
शुभ धान्येश सुयोग तौ, कछु बढ़ती हू लेख ॥ ८ ॥
संवत नाम जु नेष्ट तो, अल्पहि बन बहु नाज।
चना अधिक गोधूम यव, अल्पहि नेष्ट बिराज ॥ ९ ॥
मध्यम में मध्यम सबै, उत्तम सातौ तूल।
जुडरी कीरा शून्य में, गिरुआ गेहूं मूल ॥ १० ॥
बहु बर्षा लखि शून्य में, मध्यम मध्यम जान।
उत्तम होइ सुहावनी, स्वल्प नेष्ट में मान ॥ ११ ॥
कहै नखत जा साल में, तेही सब बरखात।
जामें खेचर योग जस, तब तैसै होजात ॥ १२ ॥
नेष्ट साल मलिमास में, मध्यम फल को देत।
मध्यम उत्तम फल लहै, उत्तमहू अधिकेत ॥ १३ ॥

अथ आढकविचार ॥

मेष तीन भष इन्दु में, कर्क संक्रमण मास।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सौ आढक जल जानिये, धन हरि इन्दु पचास ॥ १ ॥
मृग कन्या तुल इन्दु में, अस्सी आढक जान।
कर्क कुम्भ अलि इन्दु में, आढक छब्बिस मान ॥ २ ॥
सौ योजन ऊंचो समझि, लम्बो एक हजार।
आढक को परिमाण यह, कह्यो बराह विचार ॥ ३ ॥
चौथाई सोखै पवन, आधो गिरि बर्षाय।
आधो बर्षत है सही, पृथ्वी मण्डल आय ॥ ४ ॥
१० २० ८ १२ १८ १८ ५
दश नख वसु रवि अष्टदश, अष्टादश पुनि पांच।
कर्क संक्रमण बार सों, संवत बिस्वा जांच ॥ ५ ॥

अथ गुरुविचार ॥

अति बर्षा गुरु कर्क पै, झष दक्षिण दुरभिक्ष।
खण्ड वृष्टि मृग अलि मिथुन, शेषन पै सुरभिक्ष ॥ १ ॥
जा जा धान्य कपासकों, सुरगुरु चौथो जान।
अथवा अष्टम बारहों, ताकी हानि बखान ॥ २ ॥
जन्म दशम षट तीसरो, समता राखै सोय।
शेषन को गुरु होय तौ, अतिशय निपजा होय ॥ ३ ॥

अथ शनिराशिचार ॥

संवत तें ग्रह योग है, बली ताहु तें मन्द।
अविचल ताको चारफल, वारण भ्रम कज कन्द ॥ १ ॥
मेषराशि शनि नर्मदा, बर्षै मेघ न नीर।
ज्वर पीड़ा पूरब रहै, अरु यमुना के तीर ॥ २ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तिल कपास अरु शर्करा, धान्य महर्घ बिकात।
रुद्र भवानी सों कही, सांची है यह बात ॥ ३ ॥
होवे शनि वृषराशि तौ, गोदावरि के तीर।
चौपद नाशैं रक्त की, धारा बहै गँभीर ॥ ४ ॥
सोनो तांबो तेज सब, रूपो और कपास।
अन्नभाव समता रहै, बिकै समासम घास ॥ ५ ॥
मिथुन राशि पै होइ शनि, पीड़ा दक्षिण जान।
घृतकी तेजी होत बहु, चना कछुकछु मान ॥ ६ ॥
कर्कराशि शनि होयँ तौ, धान्य समर्घ बिकाय।
तेज रुई गुड़ राज्य में, विग्रह बहु होजाय ॥ ७ ॥
सिंहराशि शनि आइके, दुरभिछ्छ करैं कनौज।
सस्य धान्य महँगो बिकै, संभल गौड न मौज ॥ ८ ॥
जब शनि कन्या राशि पै, विग्रह जगत दिखात।
घृत तिल चना रसादि ये, सब महँगे होजात ॥ ९ ॥
तुलाराशि पै होयँ शनि, दुरभिछ्छ मध्यहि देश।
रुई धान्य महँगो रहै, म्लेच्छन बड़ो कलेश ॥ १० ॥
वृश्चिक शनि विग्रह करैं, कुरुक्षेत्र पै आय।
पूरब पीड़ा तेज सब, धान्य कपास बिकाय ॥ ११ ॥
शनि धन राशि बिराजकें, पीड़ा अन्तर्वेद।
चना तेज कछु घृत करैं, जग में होय न खेद ॥ १२ ॥
मकर मन्द तेजी करैं, गुड़ कपास की बेश।
कातिक बिनशैं वृष्टि सों, बिन्ध्य मध्य के देश ॥ १३ ॥
कुम्भ राशि शनि होतहीं, देश उपद्रव होय।
सस्य धान्य महँगो बिकै, स्वस्थ रहै नहिं कोय ॥ १४ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मीन राशि के होत शनि, तेज होत सब नाज।
घृतहू कछु दुरभिछ कहूं, विग्रह राज समाज॥ १५॥

अथ शनिनक्षत्रचार॥

पशु तेजी नर रोग कहुँ, सूखा कहूँ अनन्द।
चितकबरो सबरो समय, अश्विनि पै रविनन्द॥ १॥
भरणी के शनि होत जब, धरणीयुत फल फूल।
बर्षा बहु अरु चैत्र बहु, कातिक लघु अरु तूल॥ २॥
होयँ शनैश्चर कृत्तिका, धान्य होय बेताैल।
कातिक भारे देखि जन, करैं राजसी डौल॥ ३॥
रोहिणि शनि रोहण करत, बर्षै घन अति मन्द।
कछु तेजी जग फिरविरौ, लखियतनहिंसुखकन्द॥ ४॥
मृगशिर पै बिलसत शनी, सबके शिर उठि जायँ।
अति बर्षा सुरभिछ जगत, चौपद कछुक नशायँ॥ ५॥
आर्द्रा शनि अति बर्षहीं, इकलगि जल भरपूर।
कातिक लघु अरु चैत्र बहु, घर घर बाजत तूर॥ ६॥
शनी पुनर्वसु होयँ जब, सुरभिछ सब संसार।
अरसी कोदों काकुनी, लखियत खेत अपार॥ ७॥
पुष्य शनैश्चर आय कै, सुरभिछ करैं अनन्द।
तिली उड़द अति नीपजै, लगै न कोहू फन्द॥ ८॥
आश्लेषा शनि होत जब, उपजत सातौ नाज।
प्रजा सुखारी होत सब, सुधरत सबके काज॥ ९॥
मन्द मघा पै होय जब, बर्षा कहुँ कहुँ मन्द।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

धान्य तेज जगकिरविरौ, मन को नहीं अनन्द ॥ १० ॥
पूर्वाफाल्गुनि पै लसैं, जबै शनैश्चर आय।
चना उड़द अरु मूंग बहु, सुरभिक्ष जगत दिखाय॥ ११ ॥
शनी लसैं जब उत्तरा, फाल्गुनि सुरभिक्ष होय।
पशु पीड़ा होवे कछुक, शंकर भाष्यो सोय ॥ १२ ॥
आर्द्रा तें अति वृष्टि को, रहै मघा लौं जोर।
पश्चिम सूखा हस्त शनि, पशु जन पीड़ा शोर ॥ १३ ॥
चित्रा पै जब होत शनि, घरघर लिखियत चित्र।
बहु वर्षा सुरभिक्ष जगत, शोभा बड़ी बिचित्र ॥ १४ ॥
स्वाति शनैश्चर आयकै, करैं स्वस्थता लोक।
सुरभिक्ष भूमि सुहावनी, पशु जन होत अशोक ॥ १५ ॥
होयँ विशाखा जो शनी, दुरभिक्ष मध्यहि देश।
चार नखत लघु बर्षहीं, तेजी नहिं सुख लेश ॥ १६ ॥
अनुराधा पै जो शनी, सुरभिक्ष जगत दिखात।
प्रजा सकल सुख में रहै, लता लसैं फल पात ॥ १७ ॥
ज्येष्ठा पै जब होत शनि, पश्चिम दुरभिक्ष मान।
मध्य देश में किरविरौ, तेजीहू कछु जान ॥ १८ ॥
मूल शनी पशु नरन कौं, रोगन को हैं मूल।
सुरभिक्ष जगमें बणिक कौं, घृत तेजी सौं फूल ॥ १६ ॥
आवै पूर्वा उत्तरा, षाढ शनैश्चर जोय।
बर्षा होय सुहावनी, पशु नर पीड़ा होय ॥ २० ॥
आर्द्रा तें अति बर्षहीं, मघा ऋक्ष लगि नीर।
पशु पीड़ा शनि श्रवण पै, दुरभिक्ष रेवातीर ॥ २१ ॥
होत धनिष्ठा जो शनी, सुरभिक्ष जग में जान।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

गो द्विज को पीड़ा रहै, संशय कछू न मान ॥ २२ ॥
शनी होयँ शततारका, बर्षत मेघ गँभीर।
सुरभिछ जग में रोग सों, चौपद धरत न धीर ॥ २३ ॥
जब शनि पूर्वा भाद्रपद, आवैं काहू साल।
कछु कातिक कछु चैतहू, तेजी कछुक दुकाल ॥ २४ ॥
कबहूं उत्तर भाद्रपद, जो आवैं रविनन्द।
सुरभिछ मध्यम जग रहै, बर्षै कछु कछु मन्द ॥ २५ ॥
रेवति पै शनि आयकै, बर्षा खण्ड करायँ।
उत्तम संवत योग सों, सब दुरभिछ बचजायँ॥ २६ ॥

अथ दुर्भिक्षविचार ॥

शनि ऋछ सों ग्रहयोगसों, दुरभिछ द्विविध बखान।
प्रथम कहें शनि ऋक्ष कों, अतिशय हित जगजान॥ १ ॥
अश्विनि ज्येष्ठा रोहिणी, रेवति मघा विशाख।
करै दुकाल अदृष्टि सों, शनि इनपै पद राख ॥ २ ॥
श्रवण हस्त ऋष के शनी, बर्षा सौंतु दुकाल।
आर्द्रा पूर्वा भाद्रपद, शनितहुँ बर्षाकाल ॥ ३ ॥
चौमासे इन नखत पै, शनि आवैं जा साल।
भादों तें तेजी रहै, ताही साल दुकाल ॥ ४ ॥
बिन्ध्य हिमाचल बीच में, अरु प्रयाग लों जान।
मध्यदेश कुरुक्षेत्र लों, पर पूर्वादिक मान ॥ ५ ॥
अश्विनि शनि उत्तर बिषे, रोहिणि दक्षिण जान।
मघा आय पूरब करैं, ज्येष्ठा पश्चिम मान ॥ ६ ॥
करैं विशाखा आयके, मध्यहि देश दुकाल।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पश्चिम कर दक्षिण श्रवण, रेवति मध्यम साल ॥ ७॥
शनि दुवार गति सों सदा, संवत शनि ऋष सङ्ग।
कहौं दुहुँन को मिश्रफल, सुने होय भ्रम भङ्ग ॥ ८ ॥
इन ऋष शनि शुभ साल में, नफ़ा सवाई नाज।
मध्यम डिउढ़ी वा द्विगुण, तिगुनी कीलक साज ॥ ९ ॥
शनी विशाखा होयँ जब, कीलक संवत मांहि।
आर्द्रादिक ऋष चार में, मेघ मन्द बरसांहे ॥ १० ॥
तृण लघु धान्य फलै कहूं, कहुँ कहुँ सूखै साख।
जौ मलिमास कपास कहुँ, ज्वार बाजरा भाख ॥ ११ ॥
निर्धन जन तजि देश को, आन देश को जायँ।
कुआं नदी के वारि सों, चैत्र धान्य होजायँ ॥ १२ ॥
मध्यम सालै मध्यमहि, उत्तम संवत मांह।
सुख संपति सुरभिछ जगत, रहै न कौनिहुँ चांह ॥ १३ ॥
अश्विनि ज्येष्ठा रोहिणी, मघा रेवती मन्द।
रौद्र पुनर्वसु बर्षहीं, नेष्ट साल दुख कन्द ॥ १४ ॥
डेढ़ मास उघरे जगत, मेघ जात हैं कूंद।
पूर्वा में बर्षै कहूं, कहुँ कहुँ परै न बूंद ॥ १५ ॥
ककुनी बन अरु बाजरा, मध्यम होय सुजान।
अल्प ज्वार अरु चैतहू, कहुँ कहुँ अल्प प्रमान ॥ १६ ॥
मध्यम संवत में लसै, इन ऋष पै शनि जोय।
पुनि बरसैं कहुँ उत्तरा, साल किरविरी होय ॥ १७ ॥
उत्तम संवत शून्य में, इन ऋषपै शनि जान।
आर्द्रादिक ऋष सातमें, बर्षा मध्यम मान ॥ १८ ॥
उपजैं सातौ तूल जग, कछु तेजी तृण तौर।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मध्यम कातिक चैत लखि, यह सिद्धान्त निचौर ॥ १९ ॥
हस्त श्रवण ऋष के शनी, आवैं नेष्टहि साल।
रौद्र पुनर्वसु में जगत, बर्षा होइ बिशाल ॥ २० ॥
अति बर्षा को पुष्यतें, होइ मघा लों जोर।
पश्चिम दक्षिण में रहै, क्रमसों जलको तोर ॥ २१ ॥
जल कहुँ पूर्वा उत्तरा, होत सघन घन सूम।
उड़द मूंग बहु धान्य सम, कहुँ कहुँ उखटै भूम ॥ २२ ॥
श्रवण मन्द के मार्ग पै, घन घुमएड दरसाइ।
अन्य देश नहिं होइ जल, दक्षिण कहुँ बरसाइ ॥ २३ ॥
चना नेष्ट में होय लघु, मध्यम मध्यम जान।
उत्तम संवत में रहै, सुरभिछ सकल जहान ॥ २४ ॥
आर्द्रा पूर्वा भाद्रपद, शनितु मघालों बारि।
फरे मसीनों जोंडरी, मध्यम चना निहारि ॥ २५ ॥
इन शनि ऋष की साल में, खेट कुयोगहु जोय।
बर्षा कहै प्रमाण तें, कछुक मतीह्व होय ॥ २६ ॥

अथ दुर्भिक्षकारक क्रूरग्रहयोगविचार ॥

भगण भ्रमण सों सकल ग्रह, सुख दुख करत जहान।
सुसमय कुसमय विग्रहै, ग्रहाधीन जग जान ॥ १ ॥
शुभ खेचर या पाप खग, फल सहाय सों देत।
एकाकी राजा कहूं, रण में जय कों लेत ॥ २ ॥
रवि कवि कुजतम मन्द बिधु, बुध गुरु आठ दिशेश।
फलहि शुभाशुभ देत हैं, अपनी दिश के देश ॥ ३ ॥
कर्क मीन अलि राशि पै, क्रूरयोग जल कोप।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अन्य राशि पै आयकैं, करतहि बर्षा लोप ॥ ४ ॥
रविशनि कुज शनि राहु शनि, भौम राहु रवि राहु।
कुजगुरु शनिगुरु राहुगुरु, बर्षा खण्ड कराहु ॥ ५ ॥
वक्री दोऊ स्वल्प जल, कहुँ कहुँ सूखै साख।
कहुँ मध्यम तेजी रहै, कहुँ कहुँ दुरभिछ भाख ॥ ६ ॥
जल नाड़ी जलराशि पै, शुभ सँग जग बरषाइ।
रविकुज रविगुरु कबहुँ नहिं, जल अवरोध कराइ ॥ ७ ॥
तीन क्रूर इक राशि पै, धरा न आवै नीर।
एकहु छोड़ै संग जब, तब बर्षै गम्भीर ॥ ८ ॥
वक्री तीनहुँ क्रूर जो, डिगैं प्रजा भूपाल।
मार्गी एकहु होइ तब, बर्षै होइ सुकाल ॥ ९ ॥
तीन क्रूर जल राशि पै, जल नाड़ी शुभ सङ्ग।
तामें कछुक सुयोग तौ, करैं अवर्षण भङ्ग ॥ १० ॥
जे कुयोग आषाढ़ कहुँ, करैं समावन हानि।
बर्षावधिलौं भाद्र तैं, तोके रोरौ जानि ॥ ११ ॥
बर्षावधि लौं रौद्र तैं, रहै जु बर्षा काल।
लघु बरसै दुरभिछ पड़ै, जो नहिं उत्तम साल ॥ १२ ॥
मिथुन मकर अलि मीन गुरु, सँग शनि कुज या राहु।
ग्रीषमनौंके वक्र लौं, बर्षा खण्ड कराहु ॥ १३ ॥
नेष्ट साल रवि सिंह के, सँग शनि या तम जोय।
मध्यदेश में किरविरौ, तेजी बहुधा होय ॥ १४ ॥
बर्षावधि लौं जो रहै, भादौं ते कुजराहु।
पश्चिम दक्षिण किरविरौ, अन्य देश नहिं काहु ॥ १५ ॥
मकर कुम्भ के भौम शनि, तमशनि तमकुज योग।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

नफा द्विगुण अति किरविरौ, दुरभिछ पीड़ित लोग ॥ १६ ॥
मकर कुम्भ के राहु शनि, कुजहू वक्री जोय।
नफा तिगुन तृण धान्य में, जल न मध्य में होय ॥ १७ ॥
जन जन को अपनी परत, दिशि दिशि देशन जाय।
हय हाथी गौवें मनुज, रहत तिहाई आय ॥ १८ ॥
मार्गी एकहु होय तब, बर्षत करत सुकाल।
सरसों गेहूं जौ चना, होयँ मिटैं दुख जाल ॥ १९ ॥
गुरु शनि कुज इक राशि के, लखैं परस्पर जोय।
तब लगि बर्षा हरत शनि, कुजवा दूर न होय ॥ २० ॥
बुध भृगु के जो बीच में, कै कुज पीछे सूर।
शुभ सँग नहिं जल राशि पै, उड़ै तु जग में धूर ॥ २१ ॥
रवि तें बुध भृगुसों रहै, एक नखत को बीच।
अन्तर्गत रवि जगत में, बर्षै कहुँ लघु सींच ॥ २२ ॥
बर्षावधिके नखत पै, अन्तर्गत रवि जोय।
रवि तें आगें भौम तौ, कहुँ कहुँ फीको होय ॥ २३ ॥
गुरु कवि मङ्गल मन्द जो, एक राशि के होत।
तौ नहिं बर्षै अवनि पै, बन्द बाउनी जोत ॥ २४ ॥
रवि शनि गुरु भृगु जो कहूं, होवें राहु समेत।
तो उघार सों होत हैं, जग में नीरस खेत ॥ २५ ॥
जो भेदै रोहिणि शकट, शनि या मङ्गल चन्द।
लोक क्षुधा पीड़ित रहै, परै कि यम के फन्द ॥ २६ ॥

अथ सुयोगविचार ॥

अग्नि धरा अरु पवन जल, मेषादिक ये चार।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अ.	ध.	प.	ज.
१	२	३	४
५	६	७	८
९	१०	११	१२

तिनपै खेचर आइ फल,
देत राशि अनुसार॥ १ ॥
करै सुयोग कुयोग मैं,
बर्षा कहुँ कहुँ मन्द।
बहु बर्षे पक्षांत में,
नीर राशि को चन्द॥ २॥
पूरब के भृगु बर्षहीं,
मघा पञ्च कहि आय।
पश्चिम स्वाती तीन पै, जल विपरीत नशाय॥ ३ ॥
शुक्र उदय पै देत जल, अस्त भये गुरु जान।
कुज गुरुहु निज चाल पै, तीनहु पै शनि मान॥ ४ ॥
बुध भृगु बुध गुरु शुक्र गुरु, विधु गुरु जल गम्भीर।
उदय अस्त मारग गमन, विधु सँग बहुधा नीर॥ ५ ॥
बुध भृगु विधु गुरु भौमयुत, तो जग में बर्षायँ।
अन्य पापयुत जो कहूँ, धूर उड़ै सब ठायँ॥ ६ ॥
प्रतिदिन बर्षै मिश्र खग, नीर राशि के जोय।
अधिक जानिये ता दिना, इन्दु समागम होय॥ ७ ॥
बहु बर्षै सब राशि पै, बुध भृगु सँग गुरु जोय।
पाप संग जल राशि पै, खण्ड कुयोग जु होय॥ ८ ॥
भृगु बुध कुज रवि चार ये, एक राशि दरसायँ।
तौ अम्बुद सब अवनि पै, नीर बहुत बरसायँ॥ ९ ॥
देत नेष्ट मैं स्वल्प फल, मध्यम मध्य सुयोग।
उत्तम संवत पूर्ण फल, विपरीत ही कुयोग॥ १० ॥
खल कुयोग ग्रीषम प्रबल, बर्षा प्रबल सुयोग।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मिश्रयोग जल राशि जल, नाडी कहत सुलोग ॥ ११ ॥

अथ सप्तनाडीविचार ॥

चंडवात दहना कहीं,
सौम्य नीर जल जान।
अमृता नाडी सातईं,
कृतिका तें पहिंचान ॥ १ ॥
सातहु नाडी पै करत,
शुभ खग योग सुनीर।
भौम संग गुरु इन्दु के,
बुध भृगु के गम्भीर ॥ २ ॥

चं.	वा.	द.	सौ.	नी.	ज.	ऽमृ.
कृ.	रो.	मृ.	आ.	पु.	पु.	ऽश्ले.
वि.	स्वा.	चि.	ह	उ.	पू.	म.
ऽनु.	ज्ये.	मू.	पू.	उ.	अ.	अ.
भ.	अ.	रे.	उ.	पू.	श.	ध.

तपन पवन चण्डादि पै, सौम्यादिक पै बारि।
मिश्र खेट प्रति दिन करत, कुज अकेल दुहुं कारि ॥ ३ ॥
शुभ खग के आधिक्य सों, चण्डादिक जल देयँ।
पाप शत्रु आधिक्य सों, सौम्यादिक हर लेयँ ॥ ४ ॥
सौम्या पै जल तीन दिन, नीरा पै षट जान।
जल नाडी बारह दिवस, अमृत अठारह मान ॥ ५ ॥

अथ सस्यविनाशादिविचार ॥

शरद काल जल नाडि पै, रवि या विधुनमसङ्ग।
पवन नीर उत्पात सों, शारद सस्यतु भङ्ग ॥ १ ॥
जलनाडी रवि भौम जो, उपल सहित जल देत।
अधिक जान पांचहु मिलत, बुध भृगु राहु समेत ॥ २ ॥
शुभ सँग रवि जो पाप युत, रिपुयुत वा सौम्यादि।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

उपल सहित बर्षा बहुत, उपल बिपुल चण्डादि ॥ ३ ॥
शनि तम भृगु महँ एकहू, रवि कुज संग निहार।
फागुन पालो माह में, निहलां परै तुसार ॥ ४ ॥
तरणि कर्क अति बर्षहीं, सिंहहि करैं उघार।
तौ जानों वा साल में, ठाढ़ी करै बिगार ॥ ५ ॥
जबलगि भृगु पूरब रहैं, चूहे की बढ़वार।
पश्चिम आवैं शुक्र के, घटत न लागै बार ॥ ६ ॥
ग्रीषम में रिपु संग रवि, तादिन आँधी जान।
उदय अस्त गति इन्दु सँग, झंझा पवन तुमान ॥ ७ ॥

अथ अर्घविचार ॥

भौम राशि शनि दृष्टि वा, धान्य महर्घौ मूल।
घृतहू बुध गुरु राशि पै, शुक्र राशि पै तूल ॥ १ ॥
सिंह कुम्भ पै करत हैं, अन्न तेज अरु घास।
कर्क मकर पै आय शनि, गुड़ अरु तेज कपास ॥ २ ॥
तांबो मणि सुबरन सिसो, चाँदी मोती लोह।
सूर्यादिक के धातु ये, क्रमतें जानों सोह ॥ ३ ॥
गेहूं शालि मसूर मुँग, चना ज्वार तिल माष।
सूर्यादिक के धान्य सित, शुक्र कृष्ण शनि भाष ॥ ४ ॥
सूर्य मूल शशि कौ पुहप, शनि कुज शाखा पात।
बुध गुरु भृगु के फल समझि, जो सब शाक बिकात ॥ ५ ॥
कटुक लवण अरु चरफरौ, मिश्रित मधुर खटाइ।
बकसौंठौ सूर्यादि तें, सब रस जानैं जाइ ॥ ६ ॥
रव्यादिक की राशि खल, खग वा दृष्टि निहार।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तेजी तापति बस्तु की, शनि के होत अपार ॥ ७ ॥
सूर्यादिक की राशि पै, गुरु वा दृष्टि जु पेख।
राशि स्वामि के बस्तु की, तौ समर्घता लेख ॥ ८ ॥
सरल चाल में देत ग्रह, स्थान दृष्टि फल दोउ।
पूरन सप्तम दृष्टि फल, देत न वक्री कोउ ॥ ९ ॥
गुरु सँग खल कै राहु सँग, भौम अषाढ़ै आइ।
सन पट सन रस सूत जे, सब महँगे होजाइ ॥ १० ॥
शुभबारी जौ कर्क की, कातिक सस्तो जान।
चाप संक्रमण बार शुभ, चैत समर्घो मान ॥ ११ ॥
रविकुज शनिबारीं परै, दूनों होवे मोल।
बुध गुरु भृगु शशिबारकों, अन्न मृत्तिका तोल ॥ १२ ॥
जो पहिली संक्रान्ति तें, दूजी अष दो तीन।
सस्तो महँगो चार शर, छठयें भीख न दीन ॥ १३ ॥
जाबारै रवि संक्रमण, ताहि अमावस होइ।
खप्पर लै जन जग भ्रमत, भीख न देवे कोइ ॥ १४ ॥
पहिली संक्रम बारतें, चौथे पांचै बार।
दूजी संक्रम होइ तौ, जगकों है शुभकार ॥ १५ ॥
दूजें तीजें होइ तो, रस कुसुंभ महँगाइ।
पहिले छठयँ सातयँ, अन्न महर्घ बिकाइ ॥ १६ ॥
सस्तो ऊमो पांच युग ४५, तेजी पंद्रह सुप्त।
बैठी तीस मुहूरती, समता भेद न गुप्त ॥ १७ ॥
सूती तिथि अरु क्रूर दिन, दुपहर अथवा प्रात।
जौ संक्रान्ति तु जानिये, मास महर्घो जात ॥ १८ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अथ उत्पातादिविचार ॥

बहुधा तारा केतु के, कहे एक सै एक ।
बिनु चोटी चोटी सहित, कोऊ वर्ण अनेक ॥ १ ॥
जितने दिन लौं उदय हैं, फल है उतने मास ।
जादिश में तादेश को, चोटी दिश नृप नाश ॥ २ ॥
उवैं चैत वैशाख में, जल बरसै भरपूर ।
उवैं ज्येष्ठ आषाढ़ में, धान्य होइ दुख दूर ॥ ३ ॥
श्रावण भादों जो उवैं, आनँद घर घर जान ।
आश्विन कार्त्तिक जो उवैं, चौपद हानि बखान ॥ ४ ॥
उवैं जु अगहन पूस में, चोर भीति नृप त्रास ।
उदय माघ फागुन भये, दुरभिछ परजा नास ॥ ५ ॥
तमते सतम दशम कुज, कुज ते बुध जो पांच ।
बुध ते चन्द्र जु केन्द्र में, भूमि कम्प जो जांच ॥ ६ ॥
कूर्म शेष दिग्गज हलैं, पाप भार गिरिपात ।
मेरु फुरन झष पुच्छ तें, भूमि कम्प होजात ॥ ७ ॥
रवितें छठयें भौम जो, विधु पँचयें वा सात ।
यह दिग्दाहक योग है, यहहू उल्कापात ॥ ८ ॥
गुरु भृगु बुध रवि जो कहूं, एक राशि के जोइ ।
पात योग यह धूरि की, बर्षा तबहीं होइ ॥ ९ ॥
भूमि कम्प दुरभिक्ष कर, अग्नि भीति दिग्दाह ।
केतूदय नृप युद्ध कर, निर्यातहु नृप डाह ॥ १० ॥
चण्ड शब्द झंझा पवन, चोर भीतिकर जान ।
उल्का बर्षा धूरि की, क्षयकारी पहिंचान ॥ ११ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

एक मास में ग्रहण दो, परैं जुसूरज चन्द।
तौ जनको पीड़ा रहै, क्षीण होइ आनन्द ॥ १२ ॥
ग्रस्तोदित ग्रस्तास्त जो, धान्य भूपको नास।
सर्वग्रासी होय तौ, दुरभिछ यम की त्रास ॥ १३ ॥
अस्त होत रवि राशि मैं, निकसत उदय बखान।
रवि दूजैं अति चार गति, गुरु कुज शनिकी जान ॥ १४ ॥
तीजैं सम गति होत है, चौथे मन्दहि होय।
पँचयैं छुठयैं बक्र पुनि, सात आठ अति सोय ॥ १५ ॥
नवमदशम मैं सरल गति, अतीचार पुनि जान।
तरणि ग्यारहैं बारहैं, ग्रह गति यों पहिंचान ॥ १६ ॥
ग्रीषम लौं जल हरत कुज, बक्री बुध रस तेज।
सित बक्री बर्षा करै, पीड़ा करै सुरेज ॥ १७ ॥
शनि बक्री कछु रोग की, उतपति करै नवीन।
सूर्य चन्द्र के बक्र मैं, भाषत प्रलय प्रवीन ॥ १८ ॥
शनि ऋष तैं ऋष बक्र लौं, मुँनि भज जिभ्या शेष।
अग्नि वायु जल युद्ध दुर, भिछ मारी भय पेष ॥ १९ ॥
अतीचार शुभ खेटको, बक्र पाप को होइ।
ईति भीति सौं दुख रहै, विपरीतै सुख होइ ॥ २० ॥
मीन मेष के मन्द तैं, गुरु सतयैं यह रीति।
गुरु तैं ग्यारह सूर्य तैं, अति बर्षा की ईति ॥ २१ ॥
गर्भपात बालक हतन, स्त्रीबध द्विजहि कलेश।
इन महँ एकहु होत जहँ, दुरभिछ ताही देश ॥ २२ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अथ विग्रहादिविचार कूर्मचक्र॥

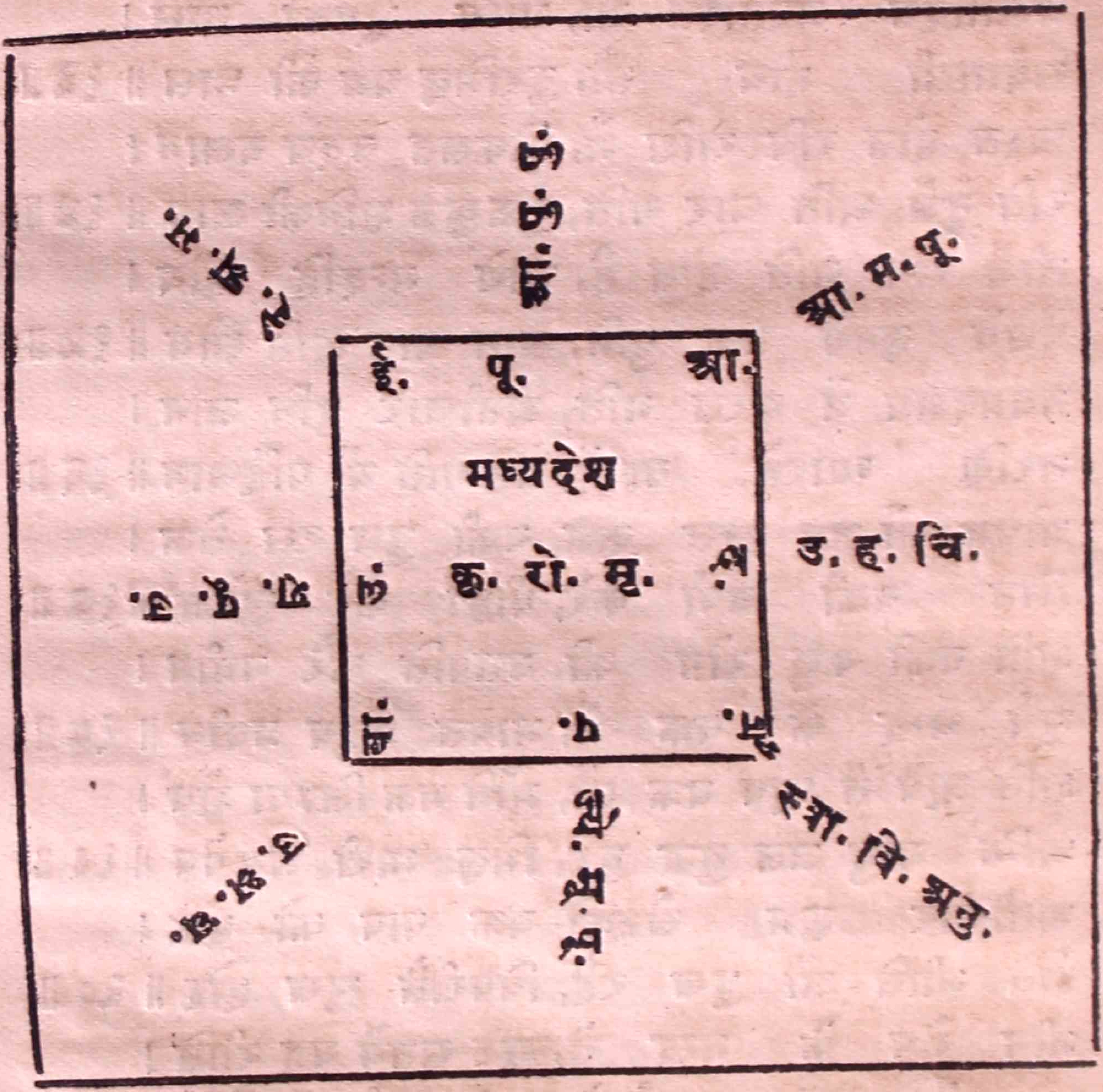

कूर्म चक्र में मध्य तें, पूर्वादिक नव देश।
तीन तीन कृतिका दिशनि, क्रम तें देत कलेश॥ १॥
अन्तर्वेदाहि मागधै, पुनि तिलंग उज्जैन।
कौंकण सिन्धुहि चीन अरु, काशमीर पाटैन॥ २॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

शनि कुज बक्री राहु सँग, चौमासे दुरभिच्छ।
और मास में करत हैं, विग्रह को परतिच्छ ॥ ३ ॥
एक चार दश सातहूँ, शत्रु दृष्टि सों देख।
शनि कुज गुरु जौ परस्पर, युद्ध कि दुरभिछ लेख ॥ ४ ॥
तुल कुज झष शनि कर्क गुरु, कै गुरु कुज तम मीन।
मिथुन शनी तु दुकालकै, नृप महँ विग्रह चीन ॥ ५ ॥
पशु नाशैं जो पांच ग्रह, षट् ग्रह नाशैं भूप।
सातहु ग्रह सब देश कों, मरु में सूखत कूप ॥ ६ ॥
होय ग्रहन को युद्ध कै, आठौ ग्रह इक सुद्ध।
देश भङ्ग होवै तबै, कै नरेश महँ युद्ध ॥ ७ ॥
शनि तम जन पीड़ा करैं, पशु पीड़ा गुरु राहु।
खल सँग, गुरुहू व्याधिकर, शुभसँग सुख सबकाहु ॥ ८ ॥
कूर्मचक्र में खग जहां, ता दिश ता फल जान।
राशि दिशा तें दृष्टि फल, सप्तम में पहिंचान ॥ ९ ॥
भूमि कम्प षट मास लौं, दिग्दाहादिक तीन।
फल कुयोग ततकालहीं, होत शान्ति सों छीन ॥ १० ॥
बहु ग्रन्थन को भेद लखि, कछु अनुभव के साथ।
कहो शुभाशुभ जाहु तें, न्यूनाधिक हरि हाथ ॥ ११ ॥
महाराष्ट्र शुचि देश में, प्रांत हैदराबाद।
कसबा बशमत में भये, श्रीनरसिंह भट आद ॥ १२ ॥
जगन्नाथ तिनके तनुज, काशी कस्यो निवास।
पुनि दतिया रहि के दयो, राक्षस ब्रह्म निकास ॥ १३ ॥
हुइ प्रसन्न दतियेश ने, दीनो भूगृह बाग।
तिन सुत बालमुकुन्द ने, अग्निहोत्र करि याग ॥ १४ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

आठ कमाये ग्राम तिन, भये पुत्र पुनि चार।
तिन लघु सीताराम सुत, श्याम नाथ निरधार ॥ १५ ॥
तिन को सुत रघुनाथ मैं, दाक्षिणात्य द्विज मेल।
कन्हरगढ़ वासी निकट, दतिया खण्ड बुंदेल ॥ १६ ॥
संवत ग्रह फल रत्न की, समयदीपिका खानि।
करी अठारा सेशकहिं, प्रकट लोक हित जानि ॥ १७ ॥

इति श्रीमदग्निहोत्रिरघुनाथविरचिता
समयदीपिकासमाप्ता ॥

—*—

संवत सँग शनि ऋषनको, लिखौं चक्र में जाइ।
तातैं घट बढ़ होइ जब, फल कहु दुहुन मिलाइ ॥ १ ॥
अश्विनि ज्येष्ठा रोहिणी, रेवति मघा विशाख।
करै दुकाज अवृष्टि सों, शनि इनपै पदराख ॥ २ ॥
श्रवण हस्त ऋष केशनी, बर्षा सों तु दुकाल।
आर्द्रा पूर्वा भाद्रपद, शनि तहुँ बर्षा काल ॥ ३ ॥
उत्तम संवत योग सों, जग में होत सुकाल।
मध्यम में है किरविरौ, दुरभिछ नेष्टहि साल ॥ ४ ॥
इन शनि ऋष की साल में, योग कुयोगहु जोय।
बर्षा कहे प्रमाण तें, अधिकी कमती होय ॥ ५ ॥
मकर कुम्भ की राशि पै, खल खग दो वा तीन।
बर्षावधिलों भाद्र तें, दो खल दुरभिछ चीन ॥ ६ ॥
ऋष अज के खल खगन तें, गुरु सतयें जा साल।
गुरु तें ग्यारह सूर्य तें, अति बर्षै न दुकाल ॥ ७ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अथ षष्ठि संवत्सर चक्रम् ॥

संख्या	संवत्सर	नाम फल	नाक्षित फल	शनि नक्षत्र	संवत्सर के योग सों शनिनक्षत्र का मिश्रितफल
१	प्रभव	उ.	उ.	मृ.	पशु पीड़ा
२	विभव	उ.	ने.	आ.	अति वर्षा से मध्यम
३	शुक्ल	म.	म.	पु.	
४	प्रमोद	उ.	उ.	पु.	
५	प्रजापाति	उ.	शू.	ऽश्ले.	
६	अङ्गिरा	उ.	उ.	म.	कैरौरी तेज़ी
७	श्रीमुख	उ.	ने.	पू.	
८	भाव	उ.	म.	उ.	
९	युवा	म.	ने.	ह.	मध्य देश में अति बर्षा पश्चिम में सूखा अकाल
१०	धाता	म.	म.	चि.	
११	ईश्वर	उ.	उ.	चि.	
१२	बहुधान्य	उ.	शू.	स्वा.	

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

संख्या	संवत्सर	नाम फल	गणित फल	शनि नक्षत्र	संवत्सर के योग सों शनिनक्षत्र का मिश्रितफल
१३	प्रमाथी	ने.	उ.	वि.	सुभिक्ष उत्तम गणित संवत् योग सों
१४	विक्रम	उ.	ने.	ऽनु.	
१५	वृष	ने.	म.	ज्ये.	मध्यम तेज़ी
१६	चित्रभानु	म.	ने.	ज्ये.	सुभिक्ष
१७	सुभानु	उ.	म.	मू.	पशुजन पीड़ा
१८	तारण	ने.	उ.	पू.	पशुजन पीड़ा
१९	पार्थिव	उ.	शू.	उ.	पशुजन पीड़ा
२०	व्यय	म.	उ.	श्र.	अति बर्षा पीड़ा
२१	सर्वजित्	उ.	ने.	ध.	पीड़ा
२२	सर्वधारी	म.	म.	श.	पशुपीड़ा
२३	विरोधी	ने.	ने.	पू.	बर्षा अकाल तेज़ी
२४	विकृति	म.	म.	उ.	

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

संख्या	संवत्सर	नाम फल	गणित फल	शनि नक्षत्र	संवत्सर के योग सौं शनिनक्षत्र का मिश्रितफल
२५	खर	म.	उ.	रे.	सुभिक्ष उत्तमगणित संवत्योगसौं
२६	नन्दन	उ.	शू.	अ.	मध्यम तेज़ी
२७	विजय	उ.	उ.	भ.	
२८	जय	उ.	ने.	कृ.	
२९	मन्मथ	ने.	म.	रो.	सूखा केरोरौ
३०	दुर्मुख	ने.	ने.	मृ.	पशुपीड़ा
३१	हेमलम्ब	म.	म.	आ.	अति बर्षा मध्यम
३२	विलम्ब	म.	उ.	पु.	
३३	विकारी	ने.	शू.	पु.	
३४	शार्वरी	ने.	उ.	ऽश्ले.	
३५	प्लव	उ.	ने.	म.	मध्यम
३६	शुभकृत्	उ.	म.	पू.	

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

संख्या	संवत्सर	नाम फल	गणित फल	शनिनक्षत्र	संवत्सर के योग सों शनिनक्षत्र का मिश्रितफल
३७	शोभन	उ.	ने.	उ.	
३८	क्रोधी	म.	म.	उ.	
३९	विश्वावसु	उ.	उ.	ह.	अतिबर्षा
४०	पराभव	ने.	शू.	चि.	
४१	प्लवंग	म.	उ.	स्वा.	
४२	कीलक	म.	ने.	वि.	सूखा अकाल तेज़ी
४३	सौम्य	उ.	म.	ऽनु.	
४४	साधारण	उ.	ने.	ऽनु.	
४५	विरोधकृत्	म.	म.	ज्ये.	सूखा केरोरी तेज़ी
४६	परिधावी	उ.	उ.	मू.	जनपीड़ा
४७	प्रमादी	उ.	शू.	पू.	पीड़ा
४८	आनन्द	उ.	उ.	उ.	

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

संख्या	संवत्सर	नाम फल	गणित फल	शनि नक्षत्र	संवत्सर के योग सों शनिनक्षत्र का मिश्रितफल
४९	राक्षस	ने.	ने	उ.	पशुजनपीड़ा
५०	नल	ने.	म.	श्र.	पीड़ा
५१	पिङ्गल	ने.	ने.	श्र.	मध्य देशमें बर्षा अकाल दक्षिण में सूखा अकाल
५२	कालयुक्त	ने.	म.	ध.	पीड़ा
५३	सिद्धार्थ	उ.	उ.	श.	पीड़ा
५४	रौद्र	म.	शू.	पू.	बर्षा अकाल तेज़ी
५५	दुर्मति	म.	उ.	उ.	
५६	दुन्दुभी	उ.	ने.	रे.	सुभिक्ष उत्तमनाम संवत्योग सों
५७	रुधिरोद्गारी	म.	म.	अ.	सूखा केरोरौइति योग होइ तो अतिबर्षा समर्घता
५८	रक्ताक्ष	ने.	ने.	भ.	
५९	क्रोधन	ने.	म.	कृ.	
६०	क्षय	ने.	उ.	रो.	पशुपीड़ा सूखा केरोरौ

श्रीरस्तु.

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

इश्तहार ॥

संग्रहशिरोमणि	२)
जातकाभरण मूल	।)
मूहूर्त्तचन्द्रिका	)।।।
कर्म्मविपाकसंहिता	≡)।।
मुहूर्त्तचिन्तामणिसटीक	।।=)
मुहूर्त्तगणपति सटीक	।–)।।
मुहूर्त्तमार्त्तण्ड सटीक	।–)।
होरा मकरन्द....	–)।।।
जातकपारिजात मूल	–)।
मुहूर्त्तचक्रदीपिका	–)।।।
ग्रहलाघव	–)
नारचंद्रदीपिका	=)

मिलने का पताः–

रायबहादुर मुंशी प्रयागनारायण भार्गव,

मालिक नवलकिशोर प्रेस–लखनऊ.

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor